भारत सरकार

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय

**राज्‍य सभा**

अतारांकित प्रश्न सं. **1117**

सोमवार,16 दिसंबर, 2013 को उत्तर के लिए

**उत्तराखंड में भारी वर्षा का पूर्वानुमान**

**1117. श्रीमती जया बच्‍चन:**

क्‍या **पृथ्‍वी विज्ञान मंत्री** यह बताने की कृपा करेंगे कि:

1. क्‍या सरकार ने हाल ही में उत्तराखंड में भारी वर्षा का पूर्वानुमान लगाने में हुई विफलता की ओर ध्‍यान दिया है, जिसकी वजह से राज्‍य को भारी एवं विनाशकारी बाढ़ का सामना करना पड़ा;
2. क्‍या सरकार ने इसके कारणों का विश्‍लेषण करने तथा सिफारिशें देने हेतु किसी समिति का गठन किया है/अध्‍ययन कराया है ;
3. क्‍या उक्‍त समिति/ अध्‍ययन का प्रतिवेदन सौंपा जा चुका है;
4. यदि हां, तो उक्‍त सिफारिशों के कार्यान्‍वयन की स्‍थिति क्‍या है; और
5. यदि नहीं, तो सरकार ने भविष्‍य में ऐसी आपदाओं से बचने के लिए क्‍या कदम उठाए हैं?

**उत्तर**

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री

(श्री एस. जयपाल रेड्डी)

1. जहां तक पृथ्‍वी प्रणाली विज्ञान संगठन-भारत मौसम विज्ञान विभाग (ईएसएसओ-आईएमडी) द्वारा विषम मौसम चेतावनियां जारी करने का प्रश्‍न है तो उसे में कोई चूक नहीं हुई है। ईएसएसओ-आईएमडी के देहरादून केन्‍द्र ने 15 जून, 2013 से शुरू करते हुए, तीन दिनों के लिए केदारनाथ, जोशीमठ, बद्रीनाथ, गंगोत्री और यमुनोत्री के लिए अलग से भारी से अत्‍याधिक भारी वर्षा (12-24 सेंमी) का पूर्वानुमान जारी किया जिसमें तद्नुसार विनिर्दिष्‍ट राज्‍य स्‍तर प्राधिकारियों को चार धाम यात्रा स्‍थगित करने की सलाह शामिल थी।
2. जी नहीं।
3. – (घ) प्रश्‍न नहीं उठता।

(ङ) 15 जून से संपूर्ण प्रदेश में भारी से अत्‍यधिक भारी वर्षा (12-24 सेंमी) शुरू हुई, जो कि तीन दिनों तक जारी रही। जून के दौरान, केदारनाथ के उर्ध्‍वप्रवाह पर, हिमनद बर्फ की मोटी परत से ढ़का हुआ था। यह रिपोर्ट किया गया कि इस घटना से पहले ही क्षेत्र में भारी बर्फबारी हो रही थी। इसी के साथ ही, लगातार होने वाली वर्षा और लगातार बर्फ के पिघलने से चोराबाडी तालाब का जल बढ़ता चला गया। तालाब के कमजोर हिमोढ़ अवरोध ने रास्‍ता प्रशस्‍त किया और बड़े हिमनदीय शिलाखण्‍डों के साथ पानी की विशाल मात्रा पूर्वी हिस्‍से के नदी तल में जा गिरी जिसके परिणामस्‍वरूप केदारनाथ शहर, रामबाड़ा, गौरीकुंड और अन्‍य स्‍थान तबाह हो गए। सरकारी सूत्रों के अनुसार, इस घटना से उत्तराखंड के लगभग 900,000 लोग प्रभावित हुए हैं। मंदाकिनी, अलकनंदा, भागीरथी और अन्‍य नदी बेसिनों के संपूर्ण जलग्रहण क्षेत्रों में हुई काफी भारी वर्षा ने राज्‍य में बाढ़ के परिमाण को और बढ़ा दिया।

प्रेक्षण प्रणालियों नेटवर्क में और वृद्धि करने की आवश्‍यकता के वैज्ञानिक आकलन के आधार पर, पश्‍चिमी हिमालयी क्षेत्र के लिए नेटवर्क विस्‍तार पर विचार किया जा रहा है जिसमें डॉप्‍लर मौसम रेडारों, वर्षा रेडारों, स्‍वचालित मौसम स्‍टेशनों (एडब्‍ल्‍यूएस), स्‍वचालित वर्षा मापियां (एआरजी), बर्फ मापियां आदि शामिल है। इसके अतिरिक्‍त, उच्‍च कार्य निष्‍पादन कम्‍प्‍यूटिंग सुविधाओं, संचार, पूर्वानुमान/चेतावनी प्रणालियां, उत्‍पाद प्रसारण प्रणालियां आदि में वृद्धि उस सतत् प्रक्रिया के भाग है जिसमें अत्‍याधुनिक विज्ञान और प्रौद्योगिकी टूल्‍स को उन वैज्ञानिकों की पहुंच में लाया जाएगा जो कि सेवा गुणवत्ता बढ़ाने के लिए मौसम अनुसंधान और पूर्वानुमान में लगे हुए हैं।

भारत सरकार (जीओआई) के आर्थिक कार्य विभाग (डीईए), के अनुरोध पर विश्‍व बैंक (डब्‍ल्‍यूबी) और एशियाई विकास बैंक (एडीबी) ने राज्‍य में संयुक्‍त तीव्र हानि और आवश्‍यकता आकलन (जेआरडीएनए) मिशन भेजा। 29 जुलाई से 7 अगस्‍त, 2013 के दौरान जेआरडीएनए दल ने राज्‍य का दौरा किया और उत्तराखंड सरकार के सहयोग से तबाही का बहु क्षेत्रीय आकलन किया और तत्‍काल क्षतिपूर्ति और पुनर्निर्माण आवश्‍यकता फ्रेमवर्क के लिए कुछ बिन्‍दुओं का निर्धारण किया। आपदा के कारण जहां राज्‍य के भीतर सभी जिले प्रभावित हुए है, आकलन का मुख्‍य फोकस उन पाँच जिलों पर था जो कि सबसे ज्‍यादा प्रभावित हुए है:- बागेश्‍वर, चमौली, पिथौरागढ, रूद्रप्रयाग और उत्तराकाशी।

\*\*\*\*\*